

CHAPTER-XV

नीलकंठ

2 MARK QUESTIONS

1. मोर-मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गए?

उत्तर: मोर के गर्दन बहुत दुंदर और नीली थी इसलिए मोर का नाम नीलकंठ रखा गया तथा मोरनी सदा उसके साथ उसकी छाया की तरह रहती थी इस आधार पर उसका नाम राधा रखा गया।

2. जाली के घर में पहुंचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ?

उत्तर: जाली के घर में पहुंचने पर मोर के बच्चों का स्वागत बड़े ही प्रेम से हुआ सभी सदस्य ने हर्ष व्यक्त किया जैसे मानो किसी नए विवाहित जोड़े का स्वागत कर रहे हों। मोर के बच्चों को देख कर कबूतर नाचना छोड़ कर उनके पीछे ही गुटर गु करने लगा जैसे वह उनके आने पर अपनी सहमति व्यक्त कर रहा हो। बड़े के सभी सदस्य मोर के बच्चों को देखना चाहते थे। खरगोश के बच्चे तो मोर के बच्चों के चारों तरफ खेलने लगे जबकि खरगोश एक कोने में बैठ कर उनका निरीक्षण कर रहे थे। तोते ने एक आंख बन्द करके उनका निरीक्षण किया और स्वागत किया।

3. 'इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा' - वाक्य किस घटना की और संकेत करता है?

उत्तर: 'इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा' वाक्य लेखिका के कुब्जा मोरनी को लेकर आने की और संकेत करता है। लेखिका एक दिन एक बीमार कुभा मोरनी को लेकर आती उसके ठीक होने के पश्चात उससे भी बाकी जनवरी के साथ जाल में भेज दिया गया परंतु कुब्जा बाकी जनवरी के साथ घुल मिल नहीं पाई। वह राधा को तथा अन्य किसी भी जानवर को नीलकंठ के करीब नहीं आने देती थी यदि कोई आता तो उसे अपनी चोंच मारकर घायल कर देती थी। उसने ईर्ष्या में मोरनी के अंडे भी फोड़ दिए जब नीलकंठ को पता चला तो वह बहुत दुखी रहने लगे और बाड़े की रौनक ही चली गई।

4. वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जाल घर में बन्द रहना कठिन क्यों हो जाता था?

उत्तर: वसंत ऋतु मोर का प्रिय ऋतु होता है इसमें पेड़ों पर नए पत्ते आते हैं, आम पर बौर आता है, अशोक नए लाल पत्तों से भर जाते हैं। वातावरण में खुशबू हो जाती है। इसलिए वर्षा ऋतु में नीलकंठ के लिए बन्द रहना कठिन हो जाता है।

5. जाली घर में रहने वाले सभी जीव मित्र बन गए थे परन्तु कूभा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया?

उत्तर: जाली घर में रहने वाले सभी जीव मिलनसार स्वभाव के थे। इसके विपरीत कूभा ईर्ष्यालु स्वभाव की थी। कूभा को किसी का भी नीलकंठ के करीब आना पसंद नहीं था इसलिए वह काफी जीवों को कोच मारकर घायल कर चुकी थी। जिसके कारण नीलकंठ भी उससे डर कर दूर भागता था। कूभा के इसी स्वभाव के कारण वह किसी से भी दोस्ती नहीं कर पाई।

5 MARK QUESTIONS

1. लेखिका को नीलकंठ की कौन कौन सी चेष्टाएं बहुत भाती थी?

उत्तर: लेखिका को नीलकंठ की निम्नलिखित चेष्टाएं बहुत भाती थी:

1. नीलकंठ बहुत दयालु स्वभाव के थे तथा वह हमेशा सबकी रक्षा करते थे।
2. वर्षा ऋतु के समय नीलकंठ अपने पंख फैलाकर नाचता तथा राधा उनका साथ देती थी यह बात लेखिका को बहुत भाती थी। शायद नीलकंठ को इस बात का अंदाज़ा हो गया था इसलिए जब भी लेखिका आती तो नीलकंठ नाचने की मुद्रा में खड़ा हो जाता था।
3. नीलकंठ को पता था कि किसके साथ कैसा व्यवहार करना है उन्होंने खरगोश के बच्चों को खाने के लिए साप के टुकड़े करके दिए थे जब लेखिका के हाथ से भून हुए चने खाते थे तो वह उनको तनिक भी नुकसान नहीं पहुंचते थे।
4. इसके अतिरिक्त नीलकंठ का गरदन उठाकर इधर उधर देखना, सिर तिरछा करके बात सुनना और गरदन झुकाकर दाना चुगना और पानी पीना भी भाता था।

2. नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को किस तरह बचाया? इस घटना के आधार पर नीलकंठ की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: एक दिन बाड़े में साप कहीं से घुस आया उसने खेलते खरगोश के बच्चे को मारने के लिए पीछे से जकड़ लिया, बच्चा चीं चीं करने लगा। इस कंदर्प की आवाज सुनकर नीलकंठ की आंखें खुली और झूले से नीचे उतरे, उन्होंने साप को गर्दन से बड़ी ही सतर्कता से पकड़ा और तब तक अपनी चौंच वार किया जब तक वह अधमरा नहीं हो गया इस तरह बच्चे की जान बचाई गई।

इस घटना के आधार पर नीलकंठ की निम्न विशेषताओं का ज्ञान होता है:

1. नीलकंठ बाड़े का एक सजग और सचेत मुखिया था। जिस प्रकार घर के मुखिया सबका ध्यान रखते हैं उसी प्रकार नीलकंठ भी सबका ध्यान रखते हैं।
2. नीलकंठ समझदार थे जिस प्रकार उन्होंने समझदारी से साप को जकड़ा उससे खरगोश का बच्चा बच गया।
3. नीलकंठ बहुत साहसी था, उसने जल्दी से बिना डरे साप को पकड़ा और बच्चे को सुरक्षित बचा लिया।

4. नीलकंठ बहुत दयालु ठवह पूरी रात खरगोश के बच्चे को पंख से गरम करते रहे।

3. यह पथ एक ' रेखाचित्र ' हैं। रेखाचित्र की क्या विशेषताएं होती हैं जानकारी प्राप्त कीजिए और लेखिका के किसी और रेखाचित्र को पढ़िए।

उत्तर: जब एक साहित्यकार शब्दों के माध्यम से साहित्य में व्यक्ति, वस्तु, और घटना का सजीव चित्र बनाते हैं तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। रेखाचित्र भावनात्मक रूप से सरल होते हैं इनमें प्रायः छोटी छोटी घटनाओं का उल्लेख होता है महादेवी वर्मा जी द्वारा लिखित अन्य रेखाचित्र स्मृति की रेखाएं एवं अतीत के चलचित्र हैं।

4. वर्षा ऋतु में जब आकाश में बादल भर जाते हैं तब मोर पंख फैलाकर धीरे धीरे मचलने लगता है, यह मोहक दृश्य देखने का प्रयास कीजिए।

उत्तर: माता पिता के साथ चिड़ियाघर जाकर यह दृश्य देखा जा सकता है अथवा इंटरनेट पर मोर के नाचने की काफी विडियो उपलब्ध हैं जिससे छात्रों का ज्ञानवर्धन होगा।

5. निबंध में आपने यह पंक्तियां पढ़ी हैं - ' में उसे शाल में लपेटकर अपने संगम के आयी जब गंगा की बीच धार में उससे प्रवाहित किया गया तब उसकी चंद्रिकाओ से बिंबित और प्रतिबिंबित होकर गंगा का एक चोड़ा पाट मयूर के समान तरंगित हो उठा '। इन पंक्तियों में एक भाव चित्र है। इसके आधार पर कल्पना कीजिए और लिखिए की मोरपंख की चंद्रिका और गंगा की लहरों में क्या समानताएं लेखिका ने देखी होंगी जिससे गंगा का एक चोड़ा पाट मयूर के समान तरंगित हो उठा।

उत्तर: निबन्ध में यह भाव चित्र उस समय का है जब लेखिका नीलकंठ के मृतक शरीर को गंगा कि बीच धारा में प्रवाहित करने जाती हैं। मोर के पंख की चंद्रिकाएं सुनहरे और गहरे रंग की होती हैं। जब लेखिका नीलकंठ के शरीर को जल में प्रवाहित करती हैं तो उनके पंख पानी में फैलकर तैरने लगते हैं। नदी की लहरों पर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं तो आंख और भी ज्यादा चमकने लगते हैं और मानो ऐसा लगता है कि गंगा का एक चोड़ा पाट मयूर के समान तरंगित हो उठा।

6. नीलकंठ की नृत्य भंगिमा का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: मेघो की छाया में वर्षा होने की अनुभूति होने मात्र से ही नीलकंठ अपने इन्द्रधनुष सरीखे रस्खो को पंडलकार खड़ा करके जो नाचता था उस गति में सहज ही एक लय एवम् ताल होता था! कभी आगे जाता कभी पीछे, दाए बाय होकर कभी ठहर जाता था। नीलकंठ के नृत्य को देखने के लिए लेखिका भी लालयित रहती थी।

7. ' रूप ' शब्द से कुरूप, स्वरूप, बहुरूप आदि शब्द बनते हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों से अन्य शब्द बनाए।

उत्तर:

1. गंद - सुगंध, दुगंध, गंधक
2. रंग - रंगीन, रंगहीन, बेरंग, रंगरोगन
3. फल - सफल, विफल, असफलता, असफल
4. ज्ञान - विज्ञान, सद्ज्ञान, अज्ञान